[Social Issues and Environmental Problems,Vol.3 (Iss.9:SE): Sep, 2015] ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i9SE.2015.3271

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में समाज की भूमिका पर्यावरणीय चेतना और सामाजिक, औषधीय मूल्य

रंजना शर्मा (व्यास)
उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल (म.प्र.)

विश्व प्रकृति निधि भारत का हमेशा ही यह उद्देश्य रहा है कि हम प्रकृति और पर्यावरण संरक्षण के साथ दीर्घकालिक तथा न्याय संगत विकास करने में सहभागी बनें।[1]

जब तक हमारे पर्यावरण में बाह्य पदार्थ आकर मिलते हैं संदूषण होता है। प्रारम्भ में यह अल्प मात्रा में होता है, जिससे एक स्तर तक मनुष्य को कोई हानि नहीं पहुँचती तब तक यह संदूषण की श्रेणी में, लेकिन जैसे ही इस सीमा का उल्लंघन होता है तो यह दूषण संदूषण न रहकर प्रदूषण बन जाता है।

हिन्दू धर्म ग्रन्थ ''वाराह पुराण'' में लिखा है कि वृक्षों के उपकार पाँच महायज्ञ हैं। वे ग्रहस्थों को ईंधन पथिकों को छाया तथा विश्राम, पक्षियों को घोंसले तथा पत्ते, जड़ एवं छालों से सारे जीवों को औषधि देकर उनका उपचार करते हैं।[2]

जितना महत्व अन्य प्रकार के प्रदूषण को दिया गया है, उतना महत्व अभी तक घर के अंदर सूक्ष्म प्रदूषण को नहीं दिया गया है और यही कारण है, हम अनजाने में ही इसके चपेट में आ जाते हैं। आधुनिक भौतिक संसाधनों की भरमार हो गयी है। रेफ्रिजरेटर, टी.वी., स्टीरियो, रोस्टर, ओवन, प्रेस, कूलर, मिक्सर, ग्राइण्डर, वाशिंग मशीन, हेयर ड्रायर, सोड़ा मेकर, कुकिंग रेंज, गैस सिलेण्डर, स्प्रे, हीटर, पर्सनल कम्प्यूटर और एयर कण्डिशनर में से ज्यादातर जो सामान पाया जाता हैं प्रदूषण अदृश्य होकर समय के साथ–साथ सांद्रित होता जाता है, जो हमें प्रदूषण का शिकार बनाकर अनेक रोगों को जन्म देता है।

वैज्ञानिक पत्रिका ''विज्ञान प्रगति''[3] अप्रैल 1985 ''घरेलू प्रदूषण जान लेवा साबित होता है।'' पूनमचन्दा के लेख ड्रायक्लीन की हुई चादर, हीटर के उपयोग से सुखाई थी, विषैली भाप से दम्पति की मृत्यु हुई थी।)

आज एयर प्यूरीफायर का उपयोग बाथरूम टॉयलेट तथा ऑफिस में सामान्य रूप से किया जाता है, उनमें पैरा डाइफ्लोरो बैंजीन नामक कीटनाशक होता है, जो शरीर पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। इसी प्रकार अगरबत्ती से ''डायक्सेन'' नामक घातक रसायन के निकलने के समाचार भी हैं, जो अत्यन्त घातक किस्म का होता है।

पर्यावरण बिगाड़कर दिया प्रदूषण थोप।
सूखा और अकाल से, प्रकृति जतावे कोप।।

ईको टूरिज्म भी निःसंदेह विश्व भर में बहुत बड़ा व्यवसाय है, जब संयुक्त राष्ट्रीय पर्यावरण ने विश्व पर्यटन संगठन के आशीर्वाद के साथ 2002 में इकोटूरिज्म का अन्तर्राष्ट्रीय वर्ष आरम्भ किया, तब उसे विशाल उद्योगों और पर्यटन सहयोगियों का बड़े स्तर पर समर्थन मिला।[4] वैसे भी ईकोटूरिज्म सरकार और उद्योग के लिये लोकप्रिय विकल्प है। बाजार–आधारित तन्त्र के माध्यम से अपने संरक्षण प्रयत्नों के समर्थन के दावे की वजह से भी ''ईकोटूरिज्म'' श्रेष्ठ विकल्प है।[5]

पर्यावरण आज एक ओर भूला सा जीवनाधार है, तो दूसरी ओर समारोह में गूँजता विषय ''विकास'' को उपभोगवादकारी दूसरा नाम मानकर चल रही अंधी दौड़ में पर्यावरण की बात आम इंसान एवं घर–घर तक पहुँचाना केवल विज्ञापनों और बाजार के कस्बे में पले माध्यमों से नहीं हो सकता। जहाँ ये माध्यम सिंगरेट या किसी केमिकल फैक्ट्री के विज्ञापन के लिये ही प्रकृति का कोई नारा जोड़कर ''पर्यावरण'' की समझ को विकृत करने और उसके साथ जुड़ी जरूरी मानवीय भावना को दूषित करने में लगे हैं, वहीं जंगल, जमीन,

पानी पर अपनी जिन्दगी और प्रकृति से पली संस्कृति बचाये रखने वाले करोड़ों सामान्य जन प्राकृतिक विनाश को भुगत रहे हैं। इन भुक्तभोगियों की आवाज, चीख और पुकार, उनकी प्रकृति पर श्रद्धा और उनका पर्यावरण से रिश्ता ही अब प्राकृतिक विनाश को भुगत रहे हैं।

अब प्राकृतिक सम्पदा के अधाधुंध दोहन और उनका पर्यावरण से रिश्ता ही अब प्राकृतिक सम्पदा के अधाधुंध दोहन और विनाश पर तुले आधुनिक मानव को भविष्य का खतरा बना सकता है। उनकी लड़ाईयाँ ही नहीं उनके जीवन संघर्ष और इस विरोधी भोग लालसा में लिप्त समाज में भी जिन्दा रहती आई उनकी सादगी ही न केवल उनकी बल्कि पीढ़ियों की जिन्दगी कुछ हद तक संवारती रही है। इन शोषितों की शक्ति उनकी जीवन सोच को मुखर करने वाले उससे जुड़ाव महसूस करने वाले हर संवेदनशील व्यक्ति को पर्यावरण का जीवन में स्थान और महत्ता का प्रचार–प्रसार अपना कर्त्तव्य मानना जरूरी है।

पर्यावरण को केवल प्रदूषण के द्वारा उजागर करने की संकुचितता नहीं, फल–फूल वृक्ष बेलि, पशु–पक्षी के साथ भील और मादल, वैभव और लालसा तक के कार्यकारण को सुलझाकर रखते हैं। वृक्षों के काटे जाने से प्रकृति और धरा पर गिरने का प्रभाव या नीम तथा जड़ी–बूटियों का रोग और रोग निवारण से सम्बन्ध उनकी प्राकृतिक सृष्टि सम्बन्धी वैज्ञानिक दृष्टि भी आवश्यक है।

कुल मिलाकर कह सकते हैं कि प्रदूषण कम करने वाले पौधे पर्यावरण में विशेष भूमिका रखते हैं।

उनके वैज्ञानिक नाम, औषधीय गुण, पर्यावरणीय गुण को सदैव ध्यान में रखकर अपने जीवन की सार्थकता को मायने दे सकते हैं।

उदाहरण के तौर पर सदाबहार (विन्कारोजिया) कैंसर प्रतिरोधी एलकालाएड के साथ ही टीएमटी को भी विघटित कर देता है। सरसों (ब्रेसिका जसियाँ) इसमें भी कैंसर रोधी गुण हैं, लेड कैडनियम निकेल कॉपर लिंक आदि को अपशोषित करने की क्षमता है। निफिया (निम्फिया अल्वा) इसमें क्रोमियम को संचित करने की क्षमता है। जलकुम्भी (इकोनिर्या कैसिपस) आयरन लैण्ड, सिल्वर, कैजिया तना क्रोमिया को संचय करने की क्षमता है।

अनार (प्यूनिक ग्रेनेरम) आयरन युक्त है, मैंग्नीज से मिली मृदा के परिवेशदार के लिये अनुकूल पौधा है। बेशरम (आइपोमिया) कैंसर संचित करने की क्षमता है। अशोक यह ऑक्सीजन उत्पादक प्राणवायु उत्सर्जित करता है। नीम अजाड़िखटा इन्डीका त्वचा सम्बन्धी रोगों में प्रभावी, वायुमण्डल शुद्धिकाल में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। पीपल (फैकसरिलीजिओसा) हृदयरोग में लाभकारी है वायु प्रदूषण को कम करता है, प्राणवायु उत्सर्जित करता है। बरगद (फैकस बैगालेन्सिस) दूध अत्यन्त पौष्टिक, पायरिया नाशक, वायु प्रदूषण रोकने में सहायक है।

आय मेंजीफेरा इन्डीका कीटाणुनाशक तथा फेफड़े एवं हैजे में उपयोगी धार्मिक यज्ञों तथा पर्यावरण शुद्धिकरण में उपयोगी है। आँवला (अम्बीलका आफिसिमेलिस) विटामिन 'सी' युक्त पादक पौषधि निर्माण वायुमण्डल शुद्धिकरण में महत्वपूर्ण हैं मटर पेसम सटैवम खाद्य पदार्थ लोहा संचय क्षमता है। इमली टेमेरिन्डस इन्डिका पर्यावरण शुद्ध करने में उपयोगी है। पलाश ब्यूटीआमोना स्परमा, चर्मरोगों में उपयोगी नाइट्रोजन स्थापित करने की क्षमता, फैंकस यूर्फोबिया कैंसर, गठिया, मधुमेह की दवा, भारी धातुओं की अवशोषण की क्षमता है।[7]

आवश्यकता है पर्यावरण के प्रति सम्यक् जानकारी की। जिससे जमीन की उर्वरा शक्ति में वृद्धि करना, भूमि के जल ग्रहण क्षमता में वृद्धि करना, पौधों की बीमारी, रोधी क्षमता में वृद्धि करना, जमीन को नरम एवं हवादार बनाना, फसलों की गुणवत्ता में वृद्धि करना।

वर्मी कम्पोस्टिंग बहुत ही सार्थक वैज्ञानिक पद्धति है। आज जनसाधारण में जागरूकता के लिये विभिन्न सार्थक विधियों के साथ प्रयास आवश्यक है।

सन्दर्भ

1. *प्रदूषण और हम – डॉ. प्रेम श्रीवास्तव, डॉ. नीरज वर्मा, विश्व प्रकृति निधि भारत, भारत मध्य प्रदेश राज्य कार्यालय पर्यावरण परिसर, भोपाल*
2. *वराह पुराण – 31.1214*

3. *वैज्ञानिक पत्रिका – विज्ञान प्रगति वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली – जुलाई 2008*
4. *प्रकृति बाजार पर्यटन – इक्वेशन्स, (इक्विटेबल टूरिज्म ऑप्शन्स) पृष्ठ – 9*
5. *भारत प्रकृति संरक्षण की गवेशणा पृष्ठ – 9*
6. *हरीतिमा आचार्य भागवत दुबे, ''विकास एवं पर्यावरण संस्थान'' पृष्ठ – 9 प्रकाश अविनाश खत्री – 1996 किरण प्रकाशन ''गुलिस्ता'' मदन महल, जबलपुर*
7. *विश्व प्रकृति निधि – भारत म.प्र. राज्य कार्यालय पृष्ठ – 42 पर्यावरण और प्रदूषण लेखक ए.एच. हाशमी पुस्तक महल, प्रकाशन दिल्ली – 06*
8. *''स्लो मर्डर'' – अंजू चौधरी एवं अनुनिता राय विज्ञान एवं पर्यावरण केन्द्र प्रकाशन, नई दिल्ली*
9. *एन्वायरमेंटल केमिस्ट्री लेखक एस.के. बेनर्जी, पेरिस हॉल इण्डिया प्रा.लि. प्रकाशन, नई दिल्ली*
10. *सर्वे ऑफ एन्वायरमेंटल – 1997, 2001 द हिन्दू प्रकाशन प्रदूषण क्या है ? नई दिल्ली केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड*